P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-5* January- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

गोरक्षपीठ के नाथ पंथ के योग साधना द्वारा आध्यात्मिक चेतना का विकास : एक ऐतिहासिक अध्ययन

Development of Spiritual Consciousness Through Yoga Cultivation of The Nath Panth of Gorakshpeeth: A Historical Study

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 27/01/2021, Date of Publication: 28/01/2021

सुधाकर लाल श्रीवास्तव
सह प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
दी0द0उ0गो0वि0वि0,
गोरखपुर, उ०प्र०, भारत

सारांश

भारतीय संस्कृति के क्रमिक विकास एवं मौलिक विचार दर्शन एवं परम्परा के उन्नयन में गोरक्षपीठ का विशिष्ट स्थान है। गोरक्षपीठ योग धर्म और राजधर्म का सुन्दर सन्धिपीठ है इसके योग्यतम नाथ उत्तराधिकारियों के तपोतेज से पीठ का कीर्तिकथा लोकजयी बन गयी है। नाथ पंथ की परम्परा के अनुसार गुरु श्री गोरक्षनाथ देश काल से परे योग पुरूष हैं उनका अस्तित्व सार्वदेशिक–सार्वकालिक है। महायोगी गोरक्षनाथ का व्यक्तित्व दर्शन साक्षात् नाथ योग का स्वरूप दर्शन है। शिवावतारी महायोगी की गोरक्षपीठ ने धर्म, अध्यात्म, शिक्षा, समाज, संस्कृति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। गोरखपुर के गौरव गाथा में आध्यात्मिक विकास और चेतना तथा शिक्षा जगत के अलावा चिकित्सा सेवा में भी पीठ ने नई पहचान दी है इनके सत्संग से भारतीय धर्म–दर्शन संस्कृति में अध्ययन की रूचि विकसित हुयी है। इसी दिशा में शोध के माध्यम से मेरा विनम्र प्रयास है।

Gorakshpeeth has a special place in the gradual development of Indian culture and in upgrading the basic thought philosophy and tradition. Gorakshpeeth is a beautiful treaty of Yoga religion and Rajdharma, the legend of the Peetha has become folklore with the tapotage of its most deserving Nath officials. According to the tradition of Nath Panth, Guru Sri Gorakshanath is a yoga man beyond the country, his existence is universal and everlasting. The personality philosophy of Mahayogi Gorakshnath is the form philosophy of Sakshatha Nath Yoga. The Gorakshpe of Shivavatari Mahayogi has contributed significantly in the fields of religion, spirituality, education, society, culture. Apart from spiritual development and consciousness and education in the Gaurav saga of Gorakhpur, the Bench has given a new identity in the medical service as well, due to their satsang, interest in studying the culture of Indian religion has developed. It is my humble effort in this direction through research.

मुख्य शब्द : गोरक्षपीठ, गोरखनाथ योगधारा, आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, दिग्विजय नाथ, आदित्यनाथ, नाथपंथ, गम्भीरनाथ, भतृहरि, मान सिंह, श्री Gorakshpeeth, Gorakhnath Yogadhara, Adinath, Matsyendranath, Digvijay Nath, Adityanath, Nathpanth, Gambhirnath, Bhatruhari, Man Singh, Shri Dnyaneshwar.

प्रस्तावना

संस्कृति राष्ट्रीय समाज के श्रेष्ठतम जीवन मूल्यों से निर्मित होती है जीवन मूल्य परम्परा और प्रगति के अनवरत समन्वय से विकसित होता है। संस्कृति मानव समाज जीवन की विशिष्टता है। संस्कृति का निर्माण मनुष्य के अनुभवजन्य एवम मन–विज्ञान–परम्परा के प्रयत्नों से पीढ़ी दर पीढ़ी निरन्तर विकसित आचार–विचार युक्त जीवन मूल्य के रूप में होता है। संस्कृति सृष्टा और सृष्टि को जानने और समझने और उसके साथ जड़चेतन के सम्बन्धों को समझने और तद्नुरूप जीवन मूल्य विकसित करने की प्रक्रिया है। संस्कृति पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि, आकाश, तत्व के साथ मानव सम्बन्ध को समझने का दर्शन है। संस्कृति सदैव गतिशील होती है। संस्कृति का निर्माण एक लम्बी अनवरत

सामाजिक प्रक्रिया में होता है। समस्त सामाजिक जीवन का परमोष्कर्ष संस्कृति में ही होता है। विभिन्न सभ्यताओं का उत्कर्ष संस्कृति द्वारा ही मापा जाता है।

भारतीय ऋषियों ने मानव जीवन का लक्ष्य, तद्नुरूप जीवन पद्धति का विकास किया। हिन्दुकुश हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं से घिरे समुद्र पर्यन्त भारतीय भू–भाग में एक विशिष्ट हिन्दू संस्कृति के नाम से पहचान मिली। भारतीय संस्कृति ने सुख शांति के साथ मानव जीवन को परम लक्ष्य का मार्ग दिखाया भारतीय संस्कृति हिन्दू समाज के दीर्घकालिक विकास यात्रा का प्रतिफल है। भारतीय संस्कृति एवम सभ्यता का सबसे प्राचीनतम स्रोत वेद एवम् हण्डप्पा सभ्यता के पुरा अवशेष है। तदनन्तर उपनिषद, महाकाव्य ब्राह्मण ग्रन्थ स्मृतियों कल्हण विल्हण आद्यशंकराचार्य, महायोगी गोरक्षनाथ की रचनाओं तथा भक्तियुगीन संतकवियों की रचनाओं आदि द्वारा लिखित विपुल सामग्री भारतीय संस्कृति और उसके क्रमिक विकास के साहित्यिक स्रोत है। भारतीय संस्कृति के क्रमिक विकास एवम मौलिक विचारदर्शन एवम परम्परा के उन्नयन में गोरक्षपीठ की भूमिका इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान रखते है।

नाथ परम्परा में गोरखनाथ को अमरकाय एवं अयोनिज माना गया है, नाथ पंथ की परम्परा में गोरखनाथ को चारों युग में उपस्थित होने सम्बन्धी अनेक कथाएं है। जोधपुर नरेश मानसिंह द्वारा संगृहीत पुस्तक 'नाथ चरित' में उल्लेख मिलता है कि एक बार मत्स्येन्द्र नाथ भ्रमण में निकले हुए थे, भ्रमण के दौरान एक राजा के मृत शरीर में परकाया विधा के बल पर प्रवेश कर गये, राजा के शरीर में रहकर जब मत्स्येन्द्रनाथ भोग बिलाश का आनन्द लेने लगे तो उनके परम शिष्य गोरखनाथ ने उन्हें पुनः योगी के शरीर में वापस किया। आज तक के अनुसंधानों से अभी तक मत्स्येन्द्रनाथ एवं गोरखनाथ की ऐसी कोई तिथि निर्धारित नहीं की जा सकती है। शंकर भाष्य के सबसे प्राचीन भामती टीकाकार श्री वाचस्पति मिश्र ने न्याय सूचि निबन्ध नाम के अपने ग्रन्थ में 898 संवत् की रचना का उल्लेख किया है, अनुमान किया जाता है कि यह सम्वत् विक्रम का होगा इस आधार पर 841 ई0 मानी जानी चाहिए अतः आदिशंकराचार्य का आविर्भाव काल नवीं शताब्दी का पूर्वाद्ध होगा। 1. यदि इस कालक्रम को स्वीकार किया जाय तो गोरखनाथ का काल एक शताब्दी पर्व प्रतीत होता है, क्योंकि भर्तृहरि गोरखनाथ के शिष्य थे गोरखनाथ द्वारा वप्पारावर्ल को तलवार भेंट करने की घटना को आधार मानने वाले वप्पा रावल के समकालीन गोरखनाथ को मानते है। 2. वप्पारावल की विस्तृत चर्चा जेम्स कर्नल टॉड ने अपनी पुस्तक में की है। 3. रोम के प्रसिद्ध विद्वान टेसीटरी का मत है कि कनफटा योगी (नाथ योगी) लोग बौद्धमत के प्रारम्भिक समय से ही विद्यमान थे किन्तु उनकी योग्यता का विकास बौद्ध मत में पतनकाल में ही हुआ। 4. भारतीय दर्शन की चिन्तन परम्परा में योग का प्रारम्भ आदि काल से है। 5. भगवान शिव ही भारत के सबसे प्राचीन देवता है इसीलिए इन्हें नाथ भी कहा जाता है। नाथ पंथ का अराध्यदेव शिव है, इसके बाद इस पंथ में दत्रादेय को स्थान प्राप्त है जिन्होंने शैव वैष्णओं और शाम्तों में सामजस्य स्थापित करने का कार्य किया। 6. इन्हीं के शिष्य थे मत्स्येन्द्रनाथ। राजा भर्तृहरि गोरखनाथ के शिष्य थे, इस आधार पर भी गोरखनाथ का काल सातवीं शताब्दी प्रतीत होता है। 7. राहुल सांस्कृत्यायन ने चौरासी सिद्धों में ही गोरखनाथ का उल्लेख किया है, इन चौरासी सिद्धों का काल 750 से 1175 ई0 है। 8. नाथ पंथ की परम्परा के अनुसार गुरु श्री गोरखनाथ देश काल से परे योग पुरूष है उनका अस्तित्व सर्वदेशिक–सार्वकालिक है। उनकी शिष्य परम्परा भारत से बाहर तिब्बत, नेपाल, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश, वर्मा, भूटान आदि देशों में विद्यमान है। महायोगी गोरखनाथ के सम्बन्ध में उपलब्ध आख्यानों से स्पष्ट है कि वे शिव स्वरूप है अयोनिज और अकार है। वे कार्य सिद्ध योगेश्वर है साक्षात भगवान शिव ने महाकाल योग शास्त्र में कहा है। ''मैंने योग मार्ग के प्रचार के लिए गोरक्ष रूप धारण किया है।''

साहित्यावलोकन

नाथ सम्प्रदाय पर बहुत से शोध किये जा रहे है जिसमें 2019 में महायोगी गुरु गोरखनाथ शोध पीठ से प्रकाशित डॉ0 प्रदीप राव की पुस्तक नाथपंथ का समाज दर्शनन में उन्होंने दर्शाया है कि श्री गोरखनाथ ने भारत में सामाजिक परिवर्तन में वही भूमिका निभायी जो छठवीं शताब्दी ई0 में महात्मा बुद्ध एवं महावीर जैन ने निभायी थी। नाथ पंथ में व्यापकता को समझने के लिए जो साहित्य उपलब्ध है उनमें गोरक्ष संहिता, योग मार्तण्ड योग चिन्तामणि, मत्स्येन्द्रनाथ संहिता, गोरक्ष उपनिषद, हठयोग प्रदीपिका आदि प्रमुख है जो नाथ पंथ के सामाजिक दर्शन को समझने में सहायक होंगे। नाथ पंथ ज्ञान के साथ कर्म का, कथनी के साथ करनी का, दर्शन के साथ व्यवहार का, और शास्त्र के साथ स्वरूप का, समर्थक है। अनेक सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ नाथ पंथ ने आवाज ही नहीं उठायी बल्कि समरस दर्शन को ही आगे बढ़ाया। श्री गोरखपीठ योग को जन–जन तक पहुंचाने हेतु मासिक पत्रिका योग वाणी का प्रकाशन लोगों में सुख–दुःख में सम्मिलित होने तथा धार्मिक–सामाजिक राजनीतिक विषय पर सक्रिय हस्तक्षेप के द्वारा जन सरोकारों से जुड़ी है।

शिवावतारी महायोगी गोरक्षनाथ ने समय–समय पर भारत के विभिन्न स्थानों पर तपस्या की जिसका प्रमाणिक विवरण जोधपुराधीश महाराज मानसिंह द्वारा संग्रहीत 'श्रीनाथ तीर्थावली' ग्रन्थ में उपलब्ध होता है। इसी क्रम में महायोगी गोरक्षनाथ ने गोरखपुर को अपनी तपस्थली बनाया और लम्बे समय तक एकान्तवास का जीवन व्यतीत किया। मत्स्येन्द्रनाथ के प्रसाद से उन्हें कैवल्यपाद–स्वरूपावस्था की प्राप्ति हुयी, उन्होंने आत्म साक्षात्कार किया और कहा ''मैंने पिण्ड में ब्रह्मण्ड को ढूढ़कर सारी सिद्धियाँ प्राप्त कर ली है, कायागढ़ को विरला ही कोई जीत पाता है''। 9. श्री ज्ञानेश्वर ने अपनी गुरु परम्परा का उल्लेख करते हुए गोरखनाथ का निम्नलिखित क्रम उल्लेख किया है–आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ, गहनीनाथ, निवृत्तिनाथ, ज्ञानेश्वर। रांगेव राघव गोरखनाथ को नवीं शताब्दी ई0 में स्वीकार करते है। 10. नागेन्द्र नाथ उपाध्याय भी गोरखनाथ को नवीं शताब्दी स्वीकार करते है। 11. नाथ परम्परा में गुरु

की महत्ता पर जोर दिया गया है। गोरखनाथ जी का कहना है कि सत्य शब्द सोने की रेखा के समान है जो सभी कसौटियों पर खरा उतरता है इस सत्य शब्द का उपदेश गुरु ही करता है। 12. गुरु के वचनानुसार जो शिष्य आत्म चिन्तन नहीं करता वह परमार्थ का रहस्य नहीं समझता। 13. शिष्य अगर सुयोग्य पात्र नहीं है तो कितना भी हठपूर्वक ज्ञान प्रदान किया जाय तो उसमें ठहर नहीं पाता। 14. हठ योग साधना में बिना गुरु के परम शिव तक पहुंचना असम्भव है। गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित नाथ पंथ ने ज्ञानकर्म के अपने विशिष्ट अद्वैत सिद्धान्त पर ऊँच–नीच का भेदभाव खत्म किया। गोरखनाथ ने सत्य, शील, दान और दया जैसे व्यवहारिक गुणों के जीवन में उतारने को ही पूजा माना। उन्होंने अहंकार से बचने तथा धैर्य, शालीनता और स्थिरता का उपदेश दिया। गोरखबानी में कहते है 'सत्यों सीलं दोषं असनान।' नाथ पंथ का मानना है कि समाज और उसकी समस्याओं से भागना साधना नहीं है वास्तविक योग साधना समाज के संघर्ष को झेलते हुए समाज को उससे निजात पाने का मार्ग दिखाकर आगे ले जाना है। उनका योग मार्ग वह साधना का पथ है जिस पर चलकर सम्प्रदायगत संकीर्ण मनोवृत्तियों का नाश किया जा सकता है। नाथ सम्प्रदाय के अनुसार भगवान गोरखनाथ सर्वकालिक है और सभी युगों में भारत में अलग–अलग स्थानों पर विद्यमान रहे है। नाथ संतों को अवधूत भी कहा जाता है। 16. जब भारत मुस्लिम आक्रांताओं से त्रस्त था और वैदिक धर्म खतरे में था उस समय गुरु मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य गुरु गोरखनाथ ने नाथ सम्प्रदाय को पुनर्जीवित किया।17

शिवावतारी गुरू गोरक्षनाथ द्वारा परवर्तित योग साधना आदि नाथ भगवान शिव द्वारा विवेचित योग तत्व है। महायोगी गुरू गोरक्षनाथ सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित योग साधना के एक प्रमुख प्रवर्तक आचार्य है। योग भारतीय संस्कृति की एक विशिष्ट विशेषता है। यह शारीरिक मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक अनुशासन की ऐसी पद्धति है जिसके द्वारा मन एवम शरीर पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित किया जा सकता है। योगी राज बाबा गम्भीर नाथ के अनुसार योग अथवा योगी का अंतिम लक्ष्य प्रकृति के क्षेत्र का अतिक्रमण करते हुए सीमातीत, दुःखातीत, बन्धनातीत, अहंकार शून्य, आत्म प्रकाशित, आत्मतत्व की अनुभूति कराना है। योग भारतीय सनातन धर्म दर्शन एवं ज्ञान परम्परा की अमूल्य निधि है। भारतीय संस्कृति का कोई भी पान्थिक धारा ऐसी नहीं है जिसमें योग को मानव जीवन की चरम लक्ष्य की प्राप्ति के लिये महत्वपूर्ण न माना हो। योग दर्शन एवं योग सम्मत जीवन पद्धति महायोगी गोरक्षनाथ के पूर्व भी विद्यमान थी। तथापि महायोगी गोरक्षनाथ ने योग को युग सम्मत बनाकर एक सशक्त एवं जीवनमत के रूप में प्रतिष्ठित किया, इसे ही नाथ योग कहते है।

महायोगी गोरक्षनाथ द्वारा तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक जीवन में नाथ पंथ का प्रवर्तन एक नयी क्रान्ति का उद्घोष था। गुरू गोरक्षनाथ का नाथ पंथ भारत के संत्रस्त सामाजिक, धार्मिक जीवन को नवीन प्रवाह प्रदान किया जिसमें सदाचार की प्रतिष्ठा के साथ ऊंच–नीच की भावना, कर्मकाण्ड और पाखण्ड का कोई स्थान नहीं था। यह वह आध्यात्मिक मार्ग था जो वर्तमान जीवन को स्वस्थ, सुखी, शांतिप्रिय और सच्चरित्र बनाता था। इस मार्ग पर चलकर ईश्वर एवं मोक्ष की प्राप्ति सुनिश्चित थी। गोरक्षपीठ नाथ पंथ का सर्वोच्च केन्द्र है। हिन्दू धर्म, दर्शन, आध्यात्म और साधना के अंतर्गत समय–समय पर परिवर्तित एवमं विकसित सम्प्रदायों में नाथ पंथ का प्रमुख स्थान है। भारत वर्ष का कोई प्रदेश या अंचल या जनपद नहीं है जिसे नाथ पंथ के योगियों ने अपने साधना और तत्व ज्ञान की महिमा से पवित्र न किया हो। यह पंथ महलों से कुटियों तक फैला सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त्र करने वाला लोकप्रिय पंथ रहा है।

नाथ पंथ की साधना पद्धति का मूलरूप औपनिषदिक योगधारा तथा आगमधारा में सम्मिलित है। इस पंथ के योगी साधना के द्वारा मृत्यु पर विजय प्राप्त कर अमर पद को प्राप्त करते है। नाथ शब्द के दो अर्थ है–परम तत्व, ब्रम्ह या गुरु। नाथ शब्द का प्रयोग उपाधि के रूप में किया गया इस सम्प्रदाय में दीक्षित होने के बाद उनके नाम में नाथ शब्द जोड़ दिया जाता है। नवनाथ के रूप में जिन देवताओं का ध्यान नाथ परम्परानुयायी करते है उनके नाम है आदिनाथ, उदयनाथ, सत्यनाथ, संतोषनाथ, अचलनाथ, कन्यड़ीयनाथ, चौरंगीनाथ, मत्स्येन्द्र नाथ और गोरक्षनाथ।

अध्ययन का उददेश्य

गोरक्षनाथ का उद्देश्य योग साधना के द्वारा व्यक्ति के सांसारिक चेतना को संकुचित विचारों पूर्वाग्रहों से मुक्त कर आध्यात्मिक चेतना के स्तर को ऊँचा उठाना था। जहाँ पर वह परम सत्य ब्रम्ह का प्रत्यक्ष अनुभव कर सके। गोरक्षपीठ हिन्दू समाज की विकृतियों के खिलाफ जन जागरण एवं हिन्दू समाज को सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक नेतृत्व देने के लिए सदा से ही प्रतिष्ठित रहा है। नाथ पंथ का अभ्युदय ही हिन्दू तन्त्र साधना में पंचमकार के शमन के साथ दिखाई देता है। गोरक्षपीठाधीश्वर महंत दिग्विजय नाथ जी के नेतृत्व में गोरक्षपीठ ने सामाजिक परिवर्तन की जो मशाल प्रज्जवलित की वह महंत अवैद्यनाथ जी के अभियानों से पूर्णतः देदीप्यमान हो गयी। हिन्दू समाज में अस्पृश्यता एवम ऊँच–नीच जैसी कुप्रथाओं के खिलाफ देश भर में जन जागरण अभियान, सामाजिक, राजनीतिक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की आन्तरिक ताकत का एहसास हुआ। हिन्दु धर्म की रक्षा के लिये इस विरासत को योगी आदित्यनाथ जी महाराज द्वारा इसे चरमोत्कर्ष पर पहुंचाने के लिये अग्रणी भूमिका निभा रहे है। हिन्दुत्व के प्रति अगाध प्रेम तथा मन वचन और कर्म से भारतीय संस्कृति के सजग प्रहरी के रूप में योगी आदित्यनाथ जी इस महत्वपूर्ण दायित्व को निभाने के लिये अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया है।

महायोगी गोरक्षनाथ ने भारत की जातिवादी, रूढ़िवादिता के विरूद्ध जो उद्घोष किया उसे गोरक्षपीठ ने अनवरत जारी रखा। गोरक्षपीठाधीश्वर परम पूज्य महंत दिग्विजय नाथ उसके बाद परम पूज्य महंत अवैद्यनाथ उसके बाद परम पूज्य महंत अवैद्यनाथ के पदचिन्हों पर

चलते हुय पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने हिन्दू समाज के उत्थान के लिये अपना अभियान जारी रखा।

निष्कर्ष

गोरक्षपीठ के प्रतिनिधियों ने और नाथ पंथ के योगी सामाजिक विभेदीकरण को अस्वीकार करते हुये मनुष्य मात्र को ही श्रेष्ठ माना। योगमार्ग के द्वारा मानव को मुक्ति का मार्ग दिखाने वाली नाथपंथी परम्परा मानव दुःख के परित्राण हेतु सदैव संवेदनशील रही। सामाजिक जनजागरण नाथ पंथी योगियों एवम गोरक्षपीठ के महंतों की उपासना का ही महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। गोरक्षपीठ मनुष्य की स्वाधीनता एवम उसके आध्यात्मिक विकास पर बल देता रहा है। योगीराज बाबा गम्भीर नाथ जी का अहैतुक कृपा पात्र दिग्विजयनाथ जी महाराज के समय से ही गोरक्षपीठ के राष्ट्रीय सामाजिक भूमिका का बहुआयामी विस्तार हुआ स्वाधीनता आंदोलन में दिग्विजय नाथ जी की सक्रिय भागीदारी तथा हिन्दु महासभा की सक्रिय सदस्यता से गोरक्षपीठ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का भी केन्द्र बना रहा। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के बीजारोपण के बाद महंत दिग्विजय नाथ जी महाराज ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना कर भारत के आजाद होने तक एक ऐसा शिक्षा संस्थान प्रारम्भ किया जिसमें आज प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तथा तकनीकी शिक्षा से लेकर चिकित्सा संस्था संचालित हो रही है जिसमें लगभग 35 हजार छात्र/छात्रायें शिक्षा ग्रहण कर रहे है जिन्हें भारतीय संस्कृति के प्रति गौरवबोध कराने के साथ स्वतंत्र विकसित कुशल एवम उत्तरदायित्वपूर्ण नागरिक के लिये तैयार किया जाता है।

भारतीय संस्कृति तथा हिन्दू धर्म एवं समाज के विभिन्न क्षेत्रों में नाथ पंथ के योगदान के समग्र मूल्यांकन के लिए इस शोध पत्र के माध्यम से लेखक काविनम्र प्रयास है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *बलदेव उपाध्याय : श्री शंकराचार्य, पृ0 35*
2. *सुखबीर सिंह : राजस्थान का इतिहास, पृ0 3*
3. *टाड जेम्स कर्नलः राजस्थान का इतिहास, पृ0 121*
4. *डॉ0 कल्याणी मलिकः नाथ सम्प्रदाय का इतिहास दर्शन और साधना, पृ0 5*
5. *परशुराम चतुर्वेदीःउत्तर भारत की सन्त परम्परा, पृ0 12*
6. *डॉ0 विष्णु दत्त राकेश :उत्तर भारत के निर्गुण पंथ का इतिहास, पृ0 24*
7. *अक्षय कुमार बनर्जी : नाथ योग, पृ0 7*
8. *हिन्दी काव्य धारा : पृ0 156*
9. *गोरखबानी सबदी : 23वां*
10. *रांगेय राघव : गोरखनाथ और उनका युग, पृ0 29*
11. *नागेन्द्र नाथ उपाध्याय : गोरक्षनाथ, पृ0 100*
12. *गोरखवाणी सबदी : 149*
13. *गोरखवाणी सबदी : 151*
14. *गोरखवाणी सबदी : 256*
15. *डॉ0 प्रदीप कुमार राव : नाथ पंथ का समाज दर्शन, पृ0 25*
16. *हजारी प्रसाद द्विवेदी : नाथ सम्प्रदाय, पृ0 106*
17. *डॉ0 विष्णु दत्त राकेशः उत्तर भारत के निर्गुण पंथ साहित्य का इतिहास,* पृ0 115